शौरसेनी टीका साहित्य पर प्रकाश डालें।

शौरसेनी प्राचीन काल से ही सार्वजनीन रहने के कारण महाभाषा अथवा राष्ट्रभाषा के पद पर प्रतिष्ठित रही। इस प्रकार शौरसेनी की लोकप्रियता ईसा-पूर्व की कई सदियों से ही व्याप्त रही। इसी कारण शौरसेनी आगम ग्रंथों पर भी महत्वपूर्ण टीकाएं प्राकृत मिश्रित संस्कृत में लिखी जाती हैं। विस्तार और विषयानुक्रम की दृष्टि से ये टीकाएं स्वतंत्र ग्रंथ कही जा सकती है। मूल विषय के सुन्दर स्पष्टीकरण के साथ प्रसंगवश अनेक लोकोपयोगी विषयों का समावेश भी इन टीकाओं में पाया जाता है। यहाँ संक्षेप में कुछ प्रमुख टीकाएं निम्नलिखित है।

धवल टीका — षट्खण्डागम पर लिखी गयी यह सबसे महत्वपूर्ण टीका है। इस टीका के रचयिता आचार्य वीरसेन है। इनके गुरु का नाम आर्यनन्दि हैं तथा शिष्य का नाम जिनसेन। जिनसेन ने अपने गुरु वीरसेन की सर्वार्थगामिनी नैसर्गिक प्रज्ञा की बहुत श्लाघा की है। वीरसेन ने बप्पदेव गुरु की व्याख्याप्रज्ञप्ति टीका के आधार पर चूर्णियों की शैली में 72 हजार श्लोक प्रमाण प्राकृत मिश्रित संस्कृत धवल टीका लिखी है। टीकाकार की प्रशस्ति के अनुसार यह टीका वाट-ग्रामपुर में सन् 816 में समाप्त की गयी है। टीका में आये हुए अनेक ग्रंथों के उल्लेख से स्पष्ट है कि आचार्य वीरसेन ने दिगम्बर और श्वेताम्बर दोनों ही सम्प्रदायों के विशाल साहित्य का आलोचन किया है।

टीका की प्राकृत भाषा प्रौढ़, मुहावरेदार और विषय के अनुसार संस्कृत की तर्क शैली से प्रभावित है। सन्धि और समास का भी यथास्थान प्रयोग हुआ है। प्राकृत गद्य का स्वच्छ रूप वर्तमान है। न्यायशास्त्र की शैली में गम्भीरतम विषयों को प्रस्तुत किया गया है। इस टीका में तीन-चौथाई अंश प्राकृत में हैं, शेष एक-चौथाई संस्कृत में। ~~इस टीका में तीन चौथाई~~ इस प्राकृत में शौरसेनी प्राकृत की प्रवृत्तियां वर्तमान है।

उद्धृत प्राचीन गाथाओं की भाषा शौरसेनी होते हुए भी महाराष्ट्रीपन से युक्त है। भाषा की दृष्टि से गाथाओं में एकरूपता नहीं है। वस्तुतः ये गाथाएं भिन्न-भिन्न काल के रचे गये भिन्न भिन्न ग्रंथों से उद्धृत की गयी है। इन गाथाओं का महत्व विषय की दृष्टि से जितना अधिक है, उतना ही भाषा की दृष्टि से भी। इसकी निम्नलिखित विशेषताएँ हैं— षट्खण्डागम के सूत्रों का मर्मोद्घाटन करने के साथ कर्म सिद्धान्त का सविस्तार निरूपण किया

समकालीन राजाओं, पूर्ववर्ती आचार्यों और ग्रंथों का नामोल्लेख वर्तमान है। कर्म सिद्धान्त का सुस्पष्ट और विस्तृत निरूपण किया गया है। इसमें प्रसंगवश दर्शनशास्त्र की अनेक मौलिक मान्यताओं का समावेश है। नयों का विस्तृत विवेचन किया गया है। भाषाओं और कुभाषाओं का विवेचन है। इसके साथ ही साथ श्रुतज्ञान के पदों की संख्या निरूपण किया गया है। इसमें सांस्कृतिक तत्वों का प्राचुर्य है।

कसायपाहुड पर जयधवला टीका—

आर्यमंक्षु और नागहस्ति ने कसायपाहुड का व्याख्यान किया तथा आचार्य यतिवृषभ ने इस पर चूर्णि सूत्रों की रचना की थी। आचार्य वीरसेन ने जयधवला टीका लिखना आरम्भ किया था तथा बीस हजार श्लोक प्रमाण टीका लिखने के अनन्तर ही उसका स्वर्गवास हो गया। फलतः उनके इस महान कार्य को उनके योग्य शिष्य आचार्य जिनसेन ने चालीस हजार श्लोक प्रमाण अवशेष टीका लिखकर ईस्वी सन् 837 में इसे पूर्ण किया। इस प्रकार जयधवला टीका साठ हजार श्लोक प्रमाण है। इस टीका के प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं— इसमें राग-द्वेष का विस्तृत विवेचन वर्तमान है। प्रकृति बन्ध का अनेक दृष्टियों से विश्लेषण किया है। मूलग्रंथ के विषम-कं स्पष्टीकरण के साथ प्रसंगवश शंका समाधान के रूप में कर्मसिद्धान्त का गहन एवं सूक्ष्म विश्लेषण हुआ है। इसमें सम्यक्त्व और मिथ्यात्व की स्थितियों का निरूपण है।

Scanned with CamScanner